B.A II nd year

राष्ट्रीय सुरक्षा : अवधारणा
(National Security : Concept)

परिचय (Introduction)—वर्तमान काल में विश्व का कोई भी देश यह नहीं कह सकता है कि हम पूर्णतः सुरक्षित जीवन जी रहे हैं, चूँकि प्रत्येक राष्ट्र के सामने बाह्य एवं आन्तिरक समस्याओं के साथ-साथ अन्यानेक समस्याएँ मुँह बाँयें खड़ी रहती हैं। राष्ट्र की अखण्डता, सार्वभौमिकता व राजनीतिक प्रभुसत्ता को बनाये रखने के लिए प्रत्येक देश को राष्ट्रीय सुरक्षा का व्यापक स्तर पर अध्ययन एवं मूल्यांकन करना सैन्य अध्ययन का एक अति महत्वपूर्ण विषय है। चूँकि पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था के अभाव में कोई भी देश अपनी अखण्डता बनाये रखने तथा शान्तिपूर्ण ढंग से बहुमुखी विकास नहीं कर सकता। आज विश्व की बदलती हुई राजनीति, अर्थव्यवस्थायें, शस्त्रीकरण की होड़, नैतिक मूल्यों का पतन, सामाजिक विघटन, गिरता हुआ राष्ट्रीय चरित्र व मनोबल, अनुशासनहीनता तथा बदलते हुए भौगोलिक वातावरण आदि कारकों ने राष्ट्रों के सम्मुख भय, अनिश्चितता एवं अस्थिरता का ऐसा जटिल वातावरण उत्पन्न कर दिया है कि उनसे राष्ट्रीय सुरक्षा को गम्भीर खतरे पैदा हो गये हैं। अतः इस तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है और युद्ध के विनाश के बचने के लिए अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप सैन्य, औद्योगिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय नीति, विदेश नीति, यौद्धिक नीति रक्षा व सुरक्षा नीति आदि को धारण करके व्यापक स्तर पर समस्याओं पर नियन्त्रण रखने का प्रयास करना होगा चूँकि इस सम्पूर्ण युद्धों के युग में सुरक्षा का प्रश्न और भी व्यापक हो गया है।

प्रादेशिक अखण्डता और राजनीतिक प्रभुसत्ता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सामान्य व्यक्ति और कुछ प्रबुद्ध वर्ग राष्ट्रीय सुरक्षा का अर्थ प्रादेशिक अखण्डता एवं राजनीतिक प्रभुसत्ता की रक्षा से ही लगाता है और वे सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा को समरूप मान लेते हैं। रक्षा-प्रतिरक्षा (Defence) राष्ट्रीय सुरक्षा का अर्थ प्रादेशिक अखण्डता एवं राजनीतिक प्रभुसत्ता की रक्षा से ही लगाता है और वे सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा को समरूप मान लेते हैं। रक्षा-प्रतिरक्षा (Defence) राष्ट्रीय सुरक्षा का एक अंग मात्र है। सुरक्षा एक स्थिर दशा नहीं है। सुरक्षा का क्षेत्र बड़ा व्यापक होता है। सुरक्षा एक आवश्यकता है तथा 'रक्षा' सुरक्षा प्रदान करने का साधन है। इसके अतिरिक्त अन्य साधन भी है। हमें सुरक्षा की बात करते समय उपरोक्त तथ्यों पर भी नजर रखनी चाहिए चूँकि हम राष्ट्रीय हितों को भी नजर अन्दाज नहीं कर सकते। राष्ट्रीय हितों के अन्तर्गत आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक व सैन्य तत्वों को सम्मिलित किया जा सकता है।[1]

राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सम्भावित शत्रुओं के सशस्त्र आक्रमणों के विरुद्ध सुरक्षा की समस्या तक सीमित नहीं है बल्कि इसके अन्तर्गत राष्ट्र में विद्यमान सभी आन्तरिक खतरे भी शामिल है जो राष्ट्र की सुरक्षा को चुनौती दे सकते हैं। राष्ट्र की सम्पत्ति, अर्थव्यवस्था, आदर्श, नैतिक मूल्य, एकता, अखण्डता, संस्कृति इत्यादि की सुरक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा का उत्तरदायित्व है, जबकि रक्षा क्षेत्र के अन्तर्गत सामान्य तथा वे सभी क्रियात्मक उपाय शामिल रहते ही हैं जो राष्ट्रीय सुरक्षा के विरुद्ध तत्कालीन, वास्तविक एवं सम्भावित खतरों का सामना करने के लिए

Scanned by CamScanner

उठाये जाते हैं।[2] जिस राष्ट्र की जितनी अधिक सुदृढ़ रक्षा तैयारी होगी उतना ही वह देश सुरक्षा के प्रति स्वयं को आश्वस्त अनुभव करेगा चूँकि राष्ट्र की निर्बलता उसके दुश्मनों को आक्रमण हेतु प्रेरित करती है और इस स्थिति में वह सफलता के प्रति आशावान और प्रलोभित हो जाता है। आजकल शत्रु सैन्य आक्रमण ही नहीं बल्कि आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, सामाजिक विघटन का आक्रमण भी कर सकता है। अत: इन सभी दृष्टियों से भी राष्ट्र का सबल होना अति आवश्यक है। रक्षा और सुरक्षा नीतियों का सम्बन्ध एक राष्ट्र की सुरक्षा और उसके हित संवर्द्धन के साथ-साथ बहुमुखी विकास से होता है। यही इसका उद्देश्य है। हमारे लिए आवश्यक है कि हम इसका अवधारणात्मक दृष्टि से अध्ययन करें।

राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा (Concept of National Security)—राष्ट्रीय अखण्डता एवं सार्वभौमिकता को बनाये रखने के किसी भी देश की राष्ट्रीय सुरक्षा का अध्ययन और मूल्यांकन करना इस विषय का प्रमुख कार्य है क्योंकि पर्याप्त सुरक्षा के अभाव में कोई भी राष्ट्र अपनी अखण्डता, शांति, स्थिरता और बहुमुखी विकास नहीं कर सकता। पर्याप्त सुरक्षा हेतु जहाँ एक ओर राष्ट्रीय एकीकरण की आवश्यकता होती है। वहीं दूसरी और सामरिक क्षमता को भी उतना सुदृढ़ बनाना होता है कि उत्पन्न तात्कालिक और संभावित खतरों का सामना करने व जवाब देने के साथ-साथ उन्हें निष्क्रिय खतरों का सामना करने व जवाब देने के साथ-साथ उन्हें निष्क्रिय भी किया जा सके। वास्तव में राष्ट्रीय सुरक्षा प्रश्न आज इतना व्यापक हो गया है कि इसके अन्तर्गत सैन्य सामरिक क्षमता के साथ ही साथ धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, औद्योगिक, व्यापारिक, वाणिज्यिक, राजनीतिक और भौगोलिक कारक इतने प्रमुख हो गये हैं कि इनकी अनदेखी नहीं की जा सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को सर्वाधिक रूप से प्रभावित करने वाली प्रवृत्तियों में राष्ट्रीय सुरक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, किन्तु फिर भी राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा के विश्लेषण हेतु संगठित और व्यापक रूप में प्रयास आज तक नहीं हो सका है। राष्ट्रीय सुरक्षा का अधिकांश अध्ययन राष्ट्र विशेष की समस्याओं और उसके प्रति उस देश विशेष के दृष्टिकोण से ही किया जाता है। जैसे भारत के लिए सुरक्षा की कौन-कौन सी समस्याएँ हैं। आन्तरिक और बाह्य रूप से भारत को किन-किन क्षेत्रों, कहाँ-कहाँ से चुनौतियाँ और धमकियाँ मिल रही हैं और आगे दी जा सकती हैं। इन चुनौतियों और धमकियों को देने वाले कौन-कौन से देश हैं, कौन-कौन से तत्व हैं? इनका आंकलन भारत के ही बुद्धिजीवियों, नीति-निर्माताओं, कानूनविदों, कूटनीतिज्ञों और सैन्य विशेषज्ञों को ही करना होगा। सामान्यत: राष्ट्रीय सुरक्षा को स्पष्ट करते समय चिन्तक उसे केवल सैनिक दृष्टिकोण से ही देखते हैं। प्राय: यह देखा जाता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों एवं व्यवहार की व्याख्या, निरूपण, भविष्यवाणी तथा उनके अध्ययन के समस्त प्रयासों का केन्द्र बिन्दु बन जाती हे और इसका प्रयोग राष्ट्र की रक्षा नीति के सृजन के लिए किया जाता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा समस्या की व्याख्या, विवेचना, विश्लेषण एवं निदान से जकड़ा अधिकांश साहित्य शक्ति और शांति की अवधारणा पर आधारित है। शक्ति की अवधारणा से राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा पर चिन्तन करने वाले विचारकों की विचारधारा का नेतृत्व ई० एच० कार एवं मॉरगेन्थाऊ द्वारा किया गया है, जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में यथार्थवादी संप्रत्यय की स्थापना की। यथार्थवादी दृष्टिकोण का आधार है मैकियावेली का कथन कि "मनुष्य, शस्त्र, धन

Scanned by CamScanner

हम पूर्णतः सुरक्षित वातावरण में रह रहे हैं, चूंकि प्रत्येक राष्ट्र के सामने वाह्य एवं आन्तरिक समस्याओं के साथ–साथ अनेक समस्याएं भी विद्यमान हैं जो राष्ट्र के विकास का मार्ग अवरूद्ध करती है। राष्ट्र की अखण्डता एवं प्रभुसत्ता बनाये रखने के लिए प्रत्येक राष्ट्र को एक शक्तिशाली सेना रखना नितान्त आवश्यक है चूंकि पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था के अभाव में कोई भी देश अपनी अखण्डता बनाये रखने तथा शान्तिपूर्ण ढंग से बहुमुखी विकास नहीं कर सकता। युद्ध के विनाश से बचने के लिए अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप सैनिक, औद्योगिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय नीति, विदेश नीति, यौद्धिक नीति, रक्षा एवं सुरक्षा नीति आदि को धारण करके व्यापक स्तर से समस्याओं पर नियंत्रण रखने का प्रयास प्रत्येक राष्ट्र द्वारा किया जा रहा है। चूंकि इस परमाणु शस्त्र सम्पन्न युग में सुरक्षा का प्रश्न और भी व्यापक तथा कठिन प्रतीत होता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सम्भावित शत्रुओं के सशस्त्र आक्रमणों के विरूद्ध सुरक्षा की समस्या तक सीमित नहीं है बल्कि इसके अन्तर्गत राष्ट्र में विद्यमान सभी आन्तरिक खतरे भी शामिल हैं जो राष्ट्र की सुरक्षा को चुनौती दे सकते हैं। राष्ट्र की सम्पत्ति, अर्थव्यवस्था, आदर्श नैतिक मूल्य, एकता, अखण्डता, संस्कृति की सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा का उत्तरदायित्व है। जबकि प्रतिरक्षा क्षेत्र के अन्तर्गत तत्कालीन, वास्तविक एवं सम्भावित खतरों का सामना करने के लिए उपाय अपनाये जाते हैं।

परिभाषा – राष्ट्रीय सुरक्षा– मॉर्टन वर्कोविटज के अनुसार–"राष्ट्रीय सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की वह सुरक्षा होती है जिसके द्वारा वाह्य आक्रमणों के विरूद्ध अपने आन्तरिक मूल्यों को बचाने की कोशिश करता है"। **वाल्टर लिपमेन** के अनुसार "एक राष्ट्र की सुरक्षा तब तक समझी जाती है जब उसे अपने

Scanned by CamScanner

उचित हितों को युद्ध निवारण हेतु बलिदान नहीं करना पड़ता और यदि उसे युद्ध की चुनौती दी गयी हो तो वह युद्ध के द्वारा उन्हें बचाये रखने के योग्य होता है"। अतः हम कह सकते हैं कि "राष्ट्रीय सुरक्षा का अर्थ वाह्य आक्रमणों से प्रादेशिक अखण्डता एवं राजनीतिक प्रभुसत्ता की सुरक्षा व्यवस्था करने के अलावा राष्ट्रीय एवं आन्तरिक मान्यताओं की रक्षा करने से है और वह सुरक्षा केवल राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक आर्थिक एवं सैनिक तत्वों द्वारा ही सम्भव है।

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा – राष्ट्रीय प्रतिरक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा का एक अंग है। क्योंकि सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की वह क्षमता होती है जिसके द्वारा वह वाह्य खतरों के विरूद्ध अपने आन्तरिक मूल्यों को बचाने की कोशिश करता है जबकि राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के अन्तर्गत हिंसात्मक गतिविधियों का प्रयोग करके लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में उत्पन्न अवरोधों को दूर करने के लिए प्रयत्न किये जाते हैं। प्रतिक्षा का सम्बन्ध तत्कालीन सैन्य परिस्थितियों से है। इसके अन्य साधनों में से निम्न को अपनाया जाता है –सामूहिक सुरक्षा, निरस्त्रीकरण एवं शस्त्र नियन्त्रण, शक्ति सन्तुलन एवं राजनीतिक साधन जैसे–सन्धियाँ व समझौते इत्यादि। अतः हम कह सकते हैं कि किसी भी सम्भावित आक्रमण के विरूद्ध बचाव व उसके विरूद्ध तैयारी करना ही राष्ट्रीय प्रतिरक्षा का अहम् लक्ष्य होता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के मौलिक तत्व – राष्ट्रीय सुरक्षा के मौलिक तत्व निम्नवत है :–

1. अवस्थिति :– इसके अन्तर्गत राष्ट्र की जलवायु, आर्थिक शक्ति तथा राष्ट्रीय शक्ति का निर्धारण किया जाता है। अनूकुल भौगोलिक अवस्थिति से महत्वपूर्ण आर्थिक एवं स्त्रातजीय लाभ प्राप्त होते हैं। सामुद्रिक अवस्थिति के कारण ग्रेट ब्रिटेन ने द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व तक विश्व में लगभग सभी महाद्वीपों पर अपने उपनिवेश स्थापित कर लिये थे। सामुद्रिक अवस्थिति की दृष्टि से देशों की अपनी पहचान अलग–अलग है। पाकिस्तान एवं बांग्लादेश केवल एक समुद्र से घिरे हैं जबकि भारत तीन तरफ समुद्रों से घिरा है। मध्यवर्ती राज्यों की अवस्थिति का भी अपना एक विशेष स्थान होता है जैसे–नेपाल, भूटान।

2. आकार एवम् स्वरूप :– किसी भी देश का आकार उसकी शक्ति के निर्धारण में लाभदायक व हानिकारक सिद्ध हो सकता है। राजनीतिक ईकाइयों के आधार पर तत्वों का स्थान महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके अभाव में कोई भी देश सैन्य शक्ति के रूप में उभर नहीं सकता। आकार का सम्बन्ध जनसंख्या से भी है। अधिक जनसंख्या एवं आकार वाला देश सैन्य शक्ति की

Scanned by CamScanner

[illegible] एक लाभदायक देश है। आकार रक्षा में गहराई की ओर ही इंगित करता है। स्त्रातजीय दृष्टिकोण से भारत की स्थिति बहुत अच्छी है।

3. भू–भाग :– भू–भाग के आधार पर हम किसी भी देश के विरूद्ध अपनाये जाने वाले संक्रियाओं का निर्धारण आसानी से कर सकते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों, मैदानों, नदीयों तथा रेगिस्तान आदि के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता होती है। उस क्षेत्र की जनता में एकता लाने हेतु या उसके विघटन हेतु भू–भाग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसे– चीन का भू–भाग अनेक समस्यांए पैदा करता है। उस देश का केवल 1/3 भाग ऐसा है जो राष्ट्रीय सत्ता(शक्ति)के लिए उपयुक्त है।

4. जलवायु :– भौगोलिक कारकों में जलवायु का अपना स्थान है। विशाल क्षेत्रफल वाले देश में विभिन्न प्रकार की जलवायु मिल सकती है। जिन स्थानों पर अधिक गर्मी तथा सर्दी मिलती है वहा अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जलवायु का प्रभाव स्त्रातेजी पर भी गम्भीर रूप से पड़ता है क्योंकि यह सभी प्रकार के वातावरण में सामरिक कार्यवाहियों एवं समय पर प्रतिबन्ध लगाता है।

5. सीमायें एवं सीमान्त :– सीमा को एक विशेष रेखा के रूप में तथा सीमान्त को एक क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। सीमायें प्राकृतिक एवं मानव निर्मित हो सकती है जैसे भारत एवं पाकिस्तान के बीच सीमायें जम्मू–कश्मीर को छोड़कर शेष भागों में मानव निर्मित ही हैं। इन्हीं सीमाओं से सम्बन्धित अनेकों सीमा–विवाद विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे है। भारत–चीन, भारत–पाकिस्तान, इसराइल–अरब देश, ईरान–ईराक, चीन–वियतनाम, सौमालिया–इथोपिया आदि ऐसे देश है जिनके बीच सीमा सम्बन्धी विवाद है और इसी कारण उनमें यदा–कदा सैनिक संघर्ष होते रहते है।

6. प्राकृतिक संसाधन :– प्राकृतिक संसाधन के अन्तगर्त हम खाद्यान्नों एवं कच्चा माल जैसे तत्वों को सम्मिलित कर सकते है। खनिज पदार्थों में कोयला ,लोहा एवं तेल की महत्ता सबसे अधिक है इन्हीं के सहयोग से देश में भारी उद्योगों की स्थापना करके सेनाओं सें सम्बन्धित हथियारों का निर्माण किया जा सकता है। ऊर्जा संसाधन के अन्तर्गत, कोयला, तेल, जल, विद्युत एवं परमाणु शक्ति को शामिल किया जाता है।

7. परिवहन एवं संचार साधन :– किसी भी देश के आर्थिक विकास में परिवहन और संचार साधनों का भी अपना एक महत्व है। सशस्त्र सेनाओं से सम्बन्धित आवश्यक साज–सामान एवं हथियारों का उत्पादन देश के

Scanned by CamScanner

अनेक केन्द्रों पर किया जाता है। उन स्थानों पर आवश्यक कच्चे माल को पहुचाने के लिए परिवहन की सहायता लेनी पड़ती है। यदि देश में परिवहन एवं संचार साधनों का जाल नहीं होगा तो सेनाओं की आपूर्ति को सुदृढ़ नहीं किया जा सकता है।

8. जनसंख्या :– किसी भी देश की जनसंख्या कमजोरी या शक्ति का स्त्रोत हो सकता है। विकसित देशों में अधिक जनसंख्या सामान्यतया शक्ति का द्योतक हो सकती है जबकि विकासशील देशों में कमजोरी का द्योतक होती है। भारत एवं पाकिस्तान सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश हैं। परन्तु वे सर्वाधिक शक्तिशाली नही हैं। जनसंख्या में गुण और उसके चरित्र की भी महत्ता हैं। इसके अन्तर्गत उम्र और लिंग का वितरण, जन्मदर, जीवन स्तर, स्वास्थ्य एवं शिक्षा, उत्पादन क्षमता एवं निपुणता, रीति रिवाज, विश्वास, नैतिक एवं धार्मिक नियम एवं मनोबल आते हैं। सेना एवं देश में उत्पादन के लिए आवश्यक है कि 18 और 45 वर्ष के बीच अधिक संख्या में व्यक्ति उपलब्ध हों।

9. वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षमता :– राष्ट्र के विकास के सन्दर्भ में तथा उसकी शक्ति के परिपेक्ष्य में इन दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। कृषि, उधोग, परिवाहन, संचार, शिक्षा, चिकित्सा आदि अनेक क्षेत्रों में विज्ञान एवं तकनीकी ने देश की सुरक्षा एवम् रक्षा में अमूल्य योगदान दिया है। इसके माध्यम से बैलिस्टिक मिसाइल, प्रति–बैलिस्टिक मिसाइल, न्यूटॉन बम, मेगाटन बम, परमाणु बम जैसे अत्याधुनिक सैन्य महत्व के हथियारों का विकास किया जा चुका है।

10. विदेश नीति :– किसी भी देश की विदेशनीति का निर्धारण अनेक तत्वों की सम्मिलित कार्यवाही के आधार पर किया जाता है। ये तत्व हैं– भौगोलिक तत्व, समाज की पारस्परिक मान्यतायें, आर्थिक आवश्यकतायें तथा आन्तरिक दबाब। किसी भी देश की विदेशनीति का निर्माण राष्ट्रीय हितों को दृष्टिगत रखते हुए किया जाता है। और विदेशनीति का लक्ष्य उसके आर्थिक हितों को बढावा देना है।

Scanned by CamScanner